महाकवि कबीर दास

महानगरी काशी के लहरतारा नामक सरोवर के किनारे विधवा ब्राह्मणी ने लोक लाज से बचने के लिए लहरतारा नामक सरोवर के किनारे कबीर दास को जन्म देती है, जेस्ट महीने की पूर्णिमा तिथि को महाकवि कबीरदास का जन्म विक्रम संवत 1455 को इनका जन्म हुआ था।

जैसा कि कहा गया है–

चौदह से पचपन साल गए, चंक ठाठ भये,

जेस्ट सुधि वरसायत को, पुरणमाशी विधि प्रकट भए।

घन गरजै दामिनी चमके, सरसे बुंदे झर लाग गए,

लहर तालाब में कमल खिले, कबीर भानु प्रकाश भए।।

एक मुस्लिम जुलाहा निःसंतान–पत्नी नीरू नीमा ने महाकवि कबीर दास को गोद लिया।

इसीलिए कहा जाता है कि कबीर दास के खून में हिंदू एवं मुस्लिम दोनों संप्रदायों का अच्छाइयां कूट–कूट कर भरी हुई थी। जन्म से वे हिंदू थे, जाति से मुसलमान।

जाति संप्रदाय से कुठाराघात थे , दोनों की बुराइयों अंधविश्वास को सहते आए थे।

इनकी भाषा साधुवाद थी ,ये फक्कड़ विचार के थे। दोनों संप्रदायों के अंधविश्वासों को मिटाने का प्रयास किया।

महाकवि कबीर दास –रामानंद जी के शिष्य थे, इन्हीं से इन्होंने ''राम ''नाम की महिमा का गुण गया।

महाकवि कबीर दास निर्गुण भक्ति धारा ज्ञानाश्रयी शाखा के ज्ञान के माध्यम से लोगों को अंधविश्वास दूर कर ज्ञान के माध्यम से राम नाम की महता का वर्णन अपने शब्दों में किया, इनके राम राजा दशरथ के पुत्र राम नहीं बल्कि निर्गुण परब्रह्म ''राम ''जो निर्गुण और निराकार हैं जो हर जीवो के घट–घट में वास करते हैं।

जैसा की महाकवि कबीर दास ने कहा हैः–

न मैं मंदिर न मैं मस्जिद, न काशी कैलाश, अयोध्या धाम में,

न मैं काबा (मक्का –मदिना), न मैं अरूसलम ,स्वर्ण मंदिर पंजाब में।

मुझे क्या ढूंढते हो बंदे ,मैं तेरे हृदय – हार्ट में।।

महाकवि कबीरदास के अनुसारः– व्यक्ति अज्ञानता वस अपने साईं राम को अपने हृदय में न ढुंढ कर उसे मंदिर मस्जिद, काशी–काबा (मक्का मदीना) में अपने (साईं) भगवान राम या अल्लाह का दर्शन करने के लिए 'अयोध्या धाम 'या 'काबा' जाता है।

अज्ञानी पशु हिरन कि तरह सुगंधित वस्तु कस्तूरी को पाने

के लिए वन–वन भटकता है, कस्तूरी उसके नाभि में मौजूद हैं इस ज्ञान से परे है। इसी तरह मुर्ख मानव अपनी अज्ञानतावश साईं को पाने के लिए

तीर्थ स्थलों मंदिर मस्जिद –काशी –काबा में भटकता है।

महाकवि कबीर दास ने अंधविश्वासों और कुरीतियों को

हिन्दूओं और मुसलमानो दोनों में दुर करने का प्रयास किया है।

इसीलिए महाकवि कबीर दास को साधुवाद और फक्कड़ विचार का माना गया है।

मसी कागज छुऔ नहीं ,कलम गहि नहीं हाथ ।

सात समंद कि मसि करौ, लेखनी सब बन राय ।।

महाकवि कबीर दास की तीन कृतिः–

1. साखी (बीजक)
2. सबद
3. रमैनी,